11. अभिनव मनुष्य

- रामधारीसिंह 'दिनकर'

इस कविता के द्वारा बच्चे स्नेह, मानवीयता, भाईचारा आदि का महत्व समझ सकते हैं ।

आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन।
है बँधे नर के करों में वारि, विद्युत, भाप,
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।
हैं नहीं बाकी कहीं व्यवधान
लाँघ सकता नर सरित् गिरि सिन्धु एक समान।

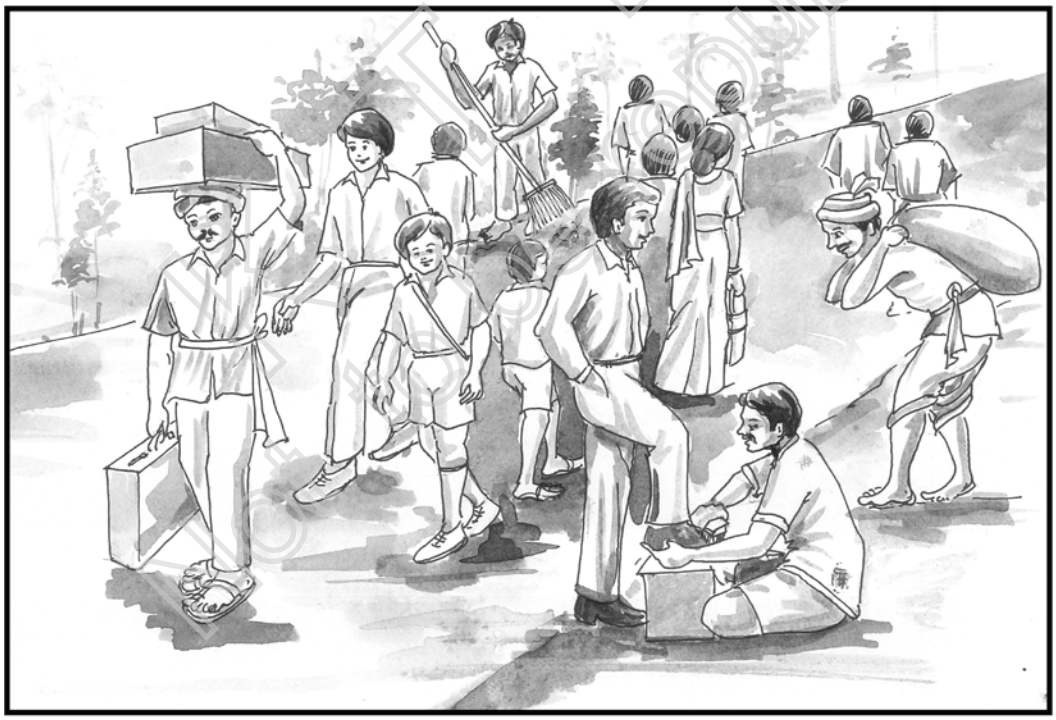

Not to be Republished

यह मनुज,
जिसका गगन में जा रहा है यान,
काँपते जिसके करों को देख कर परमाणु।

यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार।
व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय।

पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय ।
श्रेय उसका, बुद्धि पर चैतन्य उर की जीत,
श्रेय मानव की असीमित मानवों से प्रीत;
एक नर से दूसरे के बीच का व्यवधान
तोड़ दे जो, बस, वही ज्ञानी, वही विद्वान,
और मानव भी वही।

******

कविता का आशय :

इस पद्यभाग में वैज्ञानिक युग और आधुनिक मानव का विश्लेषण हुआ है। कवि दिनकर जी इस कविता द्वारा यह संदेश देना चाहते हैं कि आज के मानव ने प्रकृति के हर तत्व पर विजय प्राप्त कर ली है। परंतु कैसी विडंबना है कि उसने स्वयं को नहीं पहचाना, अपने भाईचारे को नहीं समझा। प्रकृति पर विजय प्राप्त करना मनुष्य की साधना है, मानव-मानव के बीच स्नेह का बाँध बाँधना मानव की सिद्धि है। जो मानव दूसरे मानव से प्रेम का रिश्ता जोड़कर आपस की दूरी को मिटाए, वही मानव कहलाने का अधिकारी होगा।

K T B S Not to be republished

कवि परिचय :

कवि रामधारीसिंह दिनकर जी का जन्म ई. सन् 1904 को बिहार प्रांत के मुंगेर जिले में हुआ। पहले वे रेडियो विभाग में काम करते थे। बाद में एक सरकारी कॉलेज के प्राध्यापक बने। आगे चलकर वे भारत सरकार के हिंदी सलाहकार के पद पर नियुक्त हुए। ई. सन् 1974 को इनका देहावसान हुआ ।

कवि की कुछ प्रमुख रचनाएँ हैं - हुँकार, रेणुका, रसवंती, सामधेनी, धूप-छाँह, कुरुक्षेत्र, बापू, रश्मिरथि आदि। कवि की हर रचना में हृदय को प्रभावित और उत्साहित करने की पूर्ण शक्ति है। इनकी भाषा सजीव और विषय के अनुकूल है।

'अभिनव मनुष्य' पद्यभाग 'कुरुक्षेत्र' के षष्ठ सर्ग से लिया गया है।

शब्दार्थ :

अभिनव-नया, नवीन, आधुनिक; वारि-जल, भाप - vapour, हुक्म - आज्ञा, व्यवधान - परदा, रुकावट, बाधा; सरित् - नदी, सरिता; सिंधु-सागर, समुद्र; आलोक-प्रकाश, ज्ञेय - जानकारी, श्रेय-यश, कल्याण, मंगल ।

अभ्यास

I. मौखिक प्रश्न :

1. आज की दुनिया कैसी है?
2. मानव के हुक्म पर क्या चढ़ता और उतरता है?
3. परमाणु किसे देखकर काँपते हैं?

II. लिखित प्रश्न :

अ. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

1. 'अभिनव मनुष्य' कविता के कवि का नाम लिखिए ।
2. आधुनिक पुरुष ने किस पर विजय पायी है?

K.T.B.S. Not to be republished

3. नर किन-किनको एक समान लाँघ सकता है?

4. आज मनुज का यान कहाँ जा रहा है?

आ. दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

1. 'प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन' - इस पंक्ति का आशय समझाइए ।
2. दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय क्या है?
3. इस कविता का दूसरा कौन सा शीर्षक हो सकता है? क्यों?

इ. भावार्थ लिखिए :

यह मनुज, जो सृष्टि का शृंगार,
ज्ञान का, विज्ञान का, आलोक का आगार ।
व्योम से पाताल तक सब कुछ इसे है ज्ञेय,
पर, न यह परिचय मनुज का, यह न उसका श्रेय ।

ई. उदाहरण के अनुसार तुकांत शब्दों को पहचानकर लिखिए :

उदा : नवीन–आसीन

1. भाप - ....
2. व्यवधान - ....
3. शृंगार - ....
4. ज्ञेय - ....
5. जीत - ....

कविता से आगे -

- दिनकर की अन्य काव्य-कृतियों का परिचय प्राप्त कीजिए ।
- ''मानव की सही पहचान बुद्धि व तर्क नहीं परंतु मानवीयता है।'' -इस विषय पर कक्षा में एक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

******

KTBS Not to be republished